16 शब्दों से परे

चाँदिनी हरलल्का

कला द्वारा बच्चे अपने मनोभावों को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं क्योंकि कुदरती तौर पर ही वे अधिक कलात्मक तथा सृजनशील होते हैं।

रोहन (12 वर्ष) उस सुबह एक बार फिर से शुरू हो गया। बाहरी शोर (उत्तेजित करने वाला वातावरण) से उसे नफरत है। किसी बच्चे का रोना सुनकर वह फिर उन्हीं हरकतों पर उतर आया। अपना स्कूल का बस्ता फेंककर चिल्लाते हुए वह दूसरी चीजों को फेंकने के लिए ढूँढ़ रहा था। आँसू भरी आँखों से उसने मेरी ओर देखा....निराशा से। मैं उसे धीरे–धीरे कला केन्द्र की ओर ले गई। मैंने उसे कागज की एक बड़ी शीट तथा कुछ मोमकलर दिए। खाली कागज और रंगों का पूरा डिब्बा देखकर वह खुश हो गया। रोना बन्दकर, उसने एक मोमकलर लिया और रेखाएँ खींचने लगा।

वह एकाग्रचित, मुस्कुराते हुए अपनी कलाकृति बनाने में डूबा हुआ था। केवल पाँच मिनट में ही चित्र बनाकर, उसमें रंग भरकर उसे पूरा कर चुका था। चित्र में हवाईपट्टी पर एक हवाई जहाज था। पृष्ठभूमि में थाई एअरवेज, हवाई जहाज कॉकपिट तथा हवाईअड्डा। उसके कलात्मक हाथों ने एक सम्पूर्ण चित्र बना दिया था। उसने कहा कि उसे कॉकपिट में बैठना अच्छा लगता है। यह उसके चित्र से स्पष्ट पता लग रहा था।

चित्र बनाने की इस गतिविधि ने उसे उसकी कुण्ठा से मुक्त कर दिया था। बाहरी शोर के प्रति उसकी असहनशीलता उसके द्वारा बनाए कॉकपिट के जटिल चित्र से अभिव्यक्त हो रही थी। गर्व के साथ हमने उसकी कृति स्कूल के सूचनापट्ट पर लगा दी। उसका चेहरा खिल उठा। चेहरे पर मुस्कान लिए नाचते हुए कदमों से वह वहाँ से चला गया। इस तरह के बच्चों पर कला का असर ऐसा ही होता है।

रोहन, एक स्वलीन (ऑटिस्टिक) या अपने में ही लीन रहने वाला बच्चा है। रोहन जैसे स्वलीन बच्चों की बहुत सारी समस्याएँ हैं। वे रोज ही क्रोधित होते हैं। परन्तु कला उन्हें शान्त करती है, उनका मिजाज ठीक करती है तथा उन्हें उनकी दिनचर्चा बिताने में मदद करती है। कला केवल एक स्थिति से निपटने का माध्यम ही नहीं बल्कि इलाज का एक तरीका भी है। कला केवल उनका शौक ही नहीं बल्कि उनके विचारों का विस्तार है। कला द्वारा बच्चे अपने मनोभावों को अधिक अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं, क्योंकि कुदरती तौर पर ही वे अधिक कलात्मक तथा सृजनशील होते हैं। परन्तु हर बच्चा रोहन की तरह कलात्मक नहीं हो सकता, हर चित्र सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता। पर कला का लक्ष्य इससे कहीं अलग है। यह लक्ष्य नतीजे से सम्बन्धित नहीं होना चाहिए। यहाँ केन्द्र–बिन्दु चित्र नहीं अपितु कला द्वारा बच्चे के ठीक होने की प्रक्रिया है।

यह हमें हमारे विद्यालयों में देखने को क्यों नहीं मिलता? इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि कला आमतौर पर विद्यालयों में सप्ताह में केवल एक दिन ही सिखाई जाती है। उस समय में भी बच्चों को सेब या नारियल के पेड़ों के साथ पृष्ठभूमि में पर्वतों के चित्र बनाने के लिए

कह दिया जाता है। ऐसी पूर्व निर्धारित कलाकृतियाँ तो किसी 'कलाअध्यापक' की कलात्मकता भी नहीं दर्शातीं! कला तो प्रतिदिन सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए। विशेष जरूरतों वाले बच्चे आम दिनचर्या में सफल हो सकते हैं, यदि उनके पाठ्यक्रम में कला को शामिल कर दिया जाए। इस तरह कला इन बच्चों के लिए बहुत मददगार साबित होगी।

आमतौर पर विशेष जरूरतों वाले बच्चों में स्वाभाविक रूप से कल्पनाशक्ति होती है। लेकिन प्रश्न–उत्तर का तरीका इन बच्चों के लिए, जिनकी शब्दावली सीमित है, निरूत्साहित तथा भयभीत करने वाला हो सकता है। इसलिए बच्चों से आम बातचीत के तरीकों की अपेक्षा कला द्वारा संवाद स्थापित करना एक बेहतर तरीका है।

हम इन विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए कला पर आधारित सीखने का वातावरण कैसे पैदा कर सकते हैं? यहाँ छह आसान तरीके दिए गए हैं जिनसे कला इन 'विशेष जरूरतों' वाले बच्चों की जिन्दगी में सार्थक रूप ले सके। जब इन उपायों ने मेरी एक कला परामर्शदाता के रूप में इतनी मदद की है तो यह औरों के लिए भी कारगर साबित क्यों नहीं होंगे–चाहे वह एक कक्षा में पढ़ाने वाला अध्यापक हो या फिर किसी स्वलीन बच्चे के माता–पिता अथवा विशेष जरूरतों वाले स्कूल का स्वयंसेवक।

- **जानी पहचानी जगह:** बच्चे अकसर उन लोगों के साथ सहज महसूस करते हैं जिन्हें वह जानते हैं। जिन चेहरों को वे पहचानते हैं उनके साथ समय बिताते समय उन्हें यह विश्वास होता है कि वे उनके लिए कोई खतरा पैदा नहीं करेंगे। इसलिए जरूरी है कि आप उन बच्चों के आसपास रहें ताकि वे आपको देख और पहचान सकें। आप स्वयं उन बच्चों को चुपचाप गौर से देखते रहें। हर विशेष बच्चे की जरूरतें अलग–अलग होती हैं तथा उन्हें ध्यान से देखकर ही हम यह महसूस कर पाते हैं कि हर ऐसे बच्चे के लिए कला का अर्थ अलग है।
- **उपयुक्त सामग्री:** सामग्री का चुनाव करते हुए हमें बच्चे की विकास की अवस्था को ध्यान में रखना चाहिए। किसी बच्चे की शारीरिक सीमाएँ उसके विकास की अवस्था को नहीं दर्शातीं। उदाहरण के लिए, यदि एक स्कूल जाने लायक बच्चे को चीजें पकड़ने में मुश्किल होती है तो उसे वह चीजें दें जो आप छोटे बच्चे को देंगे। जैसे बड़े ऑयल पेस्टल, बड़े मोमकलर की तरह आसानी से पकड़े जा सकते हैं। उनसे किए काम को देखने पर उनमें परिपक्वता झलकती है।
- **वस्तुपरक रहें:** जब बच्चे अपनी कल्पना को हमसे साझा करते हैं, इसका अर्थ है कि वे हम पर पूर्ण विश्वास करते हैं और इसीलिए हमें अपनी दुनिया में सम्मिलित कर रहे हैं। हम उनके द्वारा चित्रित उनके मनोभावों को मौखिक भाषा देकर उनकी मदद कर सकते हैं। जैसे,'मैंने देखा कि तुमने हरा पेड़ बनाया है। मैं एक छोटी लड़की देख सकती हूँ जो कि उदास लग रही है।' वस्तुपरक रहकर हम बच्चों को सहज बना रहे हैं तथा उन्हें अपनी भावनाओं को साझा करने का मौका दे रहे हैं। स्वलीन बच्चों के साथ जब अध्यापक एक समय में एक बच्चे के साथ एक ही कार्य करते हैं तो बच्चों की कल्पना करने, प्रतिकात्मक रूप से व्यक्त करने, पहचानने तथा चेहरे के भावों को देखकर प्रतिक्रिया करने की सामर्थ्य बढ़ जाती है। किसी बनावट को पहचानने तथा शरीर के अलग–अलग अंगों के मिलकर काम करने की कुशलता भी बढ़ जाती है।
- **संवाद स्थापित करें:** बहुत अधिक प्रश्न पूछने वाला तरीका न अपनाएँ। उन्हें जवाब देने का समय देते हुए, उनके द्वारा कही गई छोटी–छोटी बातों को जोड़कर संवाद स्थापित करने का तरीका ही मेरे लिए कारगर साबित हुआ है। इस सारी प्रक्रिया में सहनशक्ति तथा प्रोत्साहित करना बहुत अधिक महत्त्व रखते हैं। हाँ, यह करने से अधिक कहना आसान है, परन्तु कला द्वारा सफल नतीजा प्राप्त करने के लिए समय और मेहनत दोनों ही लगाने पड़ेंगे।
- **खेल–खेल में:** कला द्वारा बच्चे के साथ बहुत प्रगाढ़ सम्बन्ध बनाए जा सकते हैं। बच्चे द्वारा बनाई

कृति कैसी है, इस पर अधिक जोर न दें बल्कि बच्चे को तनाव मुक्त तथा आनन्द की अनुभूति करवाना ही असली 'मंत्र' है। इस कला के सृजनात्मक कार्य से बच्चे में अपनी सीमाएँ पहचानने की क्षमता पैदा होती है तथा वे इसे पूरी तरह से प्रयोग कर सकते हैं। वे अपनी कृतियों तथा अपने आप पर गर्व महसूस करने लगते हैं।

इन सीमित क्षमताओं वाले बच्चों के लिए कला अपने मनोभावों को व्यक्त करने का एक बहुत ही शक्तिशाली परन्तु सुरक्षित माध्यम है। कई स्थितियों में कला चिकित्सा विशेषज्ञ की सहायता लेना आवश्यक है परन्तु फिर भी आम व्यक्ति भी इन बच्चों के साथ काम करते हुए ये नियम अपना सकता है। बच्चे अपनी कला में शायद सुरुचि अथवा सौन्दर्य कभी भी न ला पाएँ, परन्तु हमें उनकी अपने भावों को कला द्वारा ईमानदारी से व्यक्त करने की क्षमता पर ध्यान देना चाहिए। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। खासतौर पर रोहन जैसे बच्चों के लिए जिनके लिए हम 'सामान्य' वातावरण नहीं बना पाए हैं। हमें कला को कलाकार या विशिष्ट वर्ग के शौक के रूप में नहीं देखना चाहिए। इन विशेष बच्चों के लिए कला संवाद की एक भाषा है, अपने भावों को व्यक्त करने का माध्यम। चलिए शब्दों से परे अधिक गहराई में चलते हैं जैसा कि अल्बर्ट हब्बार्ड ने कहा है, 'कला वस्तु नहीं, एक तरीका है।'

चाँदिनी हरलल्का *एक कला परामर्शदाता हैं। सामाजिक कला पर आधारित उनकी एक वैबसाईट है artflute.com। आर्टफ्ल्युट देश भर के कलाकारों द्वारा बनाई कलाकृतियों को दिखाने का एक मंच है। इन दिनों वे सृजनात्मक कला चिकित्सक का प्रशिक्षण ले रहीं हैं, ताकि औरतों तथा बच्चों के साथ विशेषज्ञ के तौर पर काम करने में सक्षम हो जाएँ। उनसे chandini.harlalka@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *निरूपा भटनागर*